Dada J P Vaswani

Born on August 2, 1918, Jashan Pahlajrai Vaswani, known as "Dada" to millions of admirers and devotees all over the world, was one of the most respected and revered spiritual leaders of India. Admired for his non-sectarian, non-dogmatic, humanitarian and compassionate attitude to people and the world, Dada Vaswani was a repository of practical wisdom, profoundly spiritual and deeply faithful.

The magnetic personality of Dada Vaswani was attributed to traits of utter simplicity, genuine humility, profound wisdom, deep insight into men and matter, brilliant analytical mind and tremendous positive faith. He inherited the spiritual bend of mind his uncle and mentor, Sadhu Vaswani, a spiritual and intellectual giant of modern India.

His Holiness, Dalai Lama described him as a living example of how the spirit and practice of our ancient traditions can be purely maintained, even amidst the changes and challenges of this modern age.

A scientist by training, Dada Vaswani had a brilliant academic career. He topped his class in M.Sc. (Physics) at the renowned D J Sind College in Karachi, in undivided India. Though unrivalled opportunities awaited him as an academician and as an administrator, Dada chose the road less travelled, giving up all professional ambitions to follow in the footsteps of his Master, Sadhu Vaswani.

He was a brilliant and powerful orator, who had addressed several distinguished international audiences from prestigious platforms such as the World Parliament of Religions, Global Forum for Spiritual Leaders and Parliamentarians, World Hindu Conferences, and Conferences on World Religions. Wherever he spoke – be it at the U.N. or the House of Commons, London, at Chicago, Oxford or Kyoto, Dada Vaswani had the amazing capacity to captivate and mesmerize his listeners with his fluent language, logical reasoning, profound ideas, practical wisdom and sense of humor.

Dada Vaswani was also an excellent administrator. The Sadhu Vaswani Mission, which is today a world-renowned humanitarian service organization, owes its successful and smooth functioning entirely to his inspirational leadership.

To many he was a saint. To his thousands of followers, he was the embodiment of love. Venerated as their guru and guide by innumerable devotees, Dada Vaswani himself preferred to be called a pilgrim in search of fellow pilgrims in quest of spiritual enlightenment.

In April, 1998, Dada was given the prestigious U-Thant Peace Award for his dedication and service to the cause of world peace. In December 2012, the First World Parliament of Spirituality conferred its Lifetime Achievement Award on him.

Dada's humanitarian spirit transcended caste, color and religion. His life reflected the essence of Gita as well as the Sermon on the Mount. He taught to millions how to confront problems & challenges and gave us his vision of a world without wars.

Dada had an exceptional literary talent. He had a natural gift for poetry and a lucid, narrative style of prose. He has written over two hundred books in English and Sindhi, which have been translated into over a dozen languages, ranging from profound philosophy to practical tips for everyday living. Thousands of his songs and verses filled with spiritual energy and lyrical power are compiled into the Angali Sangrah.

Dada J P Vaswani's birthday i.e. 2nd August, is celebrated as a Global Forgiveness Day. On this day, young and old alike, across continents, observe the moment of calm by forgiving all those who have wronged them and sending out vibrations of love to all. Forgiveness, he said, is the golden key to peace. It is bridge over which one can get to any human heart. He strongly believed that hearts at peace will create world peace.

Life of Dada Vaswani was an embodiment of love and compassion. His reassuring presence blazed forth the comforting message of Gita: "All is well, all was well, all will ever be well both now and a hundred years hence."

Dada's remarkable life of one hundred years ended on 12th July, 2018 in Pune where a beautiful shrine is being readied in his memory. The ever flame torch of his humanity and loving compassion continues to shine in the homes and hearts of million of people whose lives have been touched by the Mission.

Department of Posts is delighted to issue Commemorative Postage Stamp on Dada J P Vaswani and honor the memory of the great educationist, humanist and philosopher who touched the lives of millions with love and compassion.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Ms. Gulistaan
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

दादा जे पी वासवानी
DADA J P VASWANI

विवरणिका BROCHURE

दादा जे पी वासवानी

विश्वभर में अपने लाखों प्रशंसकों और भक्तों द्वारा 'दादा' के नाम से प्रसिद्ध जशन पहलाजराय वासवानी का जन्म 2 अगस्त, 1918 को हुआ। वे भारत के परम श्रद्धेय आध्यात्मिक गुरुओं में से एक थे। संप्रदायवाद और रुढिवादिता से परे, समस्त विश्व के लोगों के प्रति मानवीय एवं करूणामय दृष्टिकोण से परिपूर्ण दादा वासवानी व्यावहारिक ज्ञान, गहन आध्यात्मिकता और दृढ़ श्रदाभाव से भरे थे।

अत्यधिक सादगी, विनम्रता, गहन विवेकशीलता, मानवीय मन की गहरी समझ, अद्भुत विश्लेषण शक्ति और अडिग सकारात्मक आस्था के धनी दादा वासवानी का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था। दादा वासवानी को अध्यात्म के प्रति रुचि, अपने चाचा ओर गुरू, आधुनिक भारत के आध्यात्मिक और बौद्धि क दिग्गज साधु वासवानी से विरासत में मिली।

धर्म गुरू, दलाई लामा के अनुसार, दादा वासवानी आधुनिक युग में परिवर्तनों और चुनौतियों के बीच भी अपनी प्राचीन परम्पराओं को विशुद्ध रूप में बनाए रखने और उन्हें निभाने का जीता–जागता उदाहरण थे।

दादा वासवानी ने विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की थी और उनका अकादमिक कैरियर अत्यंत शानदार था। उन्होंने अविभाजित भारत के प्रतिष्ठित डी.जे. सिंघ कॉलेज, कराची से एम.एस.सी. (भौतिकी) की शिक्षा प्राप्त की और अपनी कक्षा में प्रथम स्थान हासिल किया। यद्यपि शिक्षाविद् तथा प्रशासक के रूप में उनके समक्ष अनेक बेजोड़ अवसर थे, परंतु दादा वासवानी ने अध्यात्म का मार्ग चुना और अपनी व्यावसायिक महत्वकांक्षाओं को त्यागते हुए अपने गुरु साधु वासवानी के पदचिन्हों पर चलने का फैसला किया।

वे अत्यंत प्रतिभाशाली और ओजस्वी वक्ता थे, जिन्होंने अनेक महत्वपूर्ण मंचों से विशिष्ट अंतरराष्ट्रीय श्रोताओं को संबोधित किया। इनमें विश्व धर्म संसद, ग्लोबल फोरम फॉर स्पिरट्यूल लीडर्स एवं पार्लियामेंटेरियंस (आध्यात्मिक नेताओं और सांसदों के लिए वैश्विक मंच), विश्व हिंदु सम्मेलन, विश्व धर्म सम्मेलन आदि शामिल हैं। वक्ता के रूप में जहां भी वे लोगों से रूबरू हुए, चाहे वह संयुक्त राष्ट्र हो अथवा हाउस ऑफ कॉमन्स, लंदन या शिकागों या ऑक्सफोर्ड या क्योटो, अपनी धाराप्रवाह भाषा, तर्कशक्ति, गहन विचारों, व्यावहारिक ज्ञान और अपने विनोद भाव से श्रोताओं को मोहित और मंत्रमुग्ध करने की अद्भुत क्षमता रखते थे।

दादा वासवानी कुशल प्रशासक भी थे। आज विश्वभर में सुविख्यात मानवतावादी सेवा संगठन साधु वासवानी मिशन की सफलता एवं सुचारू कार्यप्रणाली का श्रेय दादा वासवानी को ही जाता है।

अनेकानेक लोगों के लिए दादा वासवानी संत थे। वहीं उनके हजारों अनुयायियों के लिए वे प्रेम की प्रतिमूर्ति थे। असंख्य भक्तों द्वारा उनके गुरु और मागदर्शक के रूप में पूजे जाने वाले दादा वासवानी स्वयं को ऐसा तीर्थयात्री कहलाना पसंद करते थे, जो आध्यात्मिक ज्ञान की खोज के मार्ग पर साथी तीर्थयात्रियों की तलाश में था।

अप्रैल 1998 में दादा को विश्व शांति के उद्देश्य के प्रति उनके समर्पण एवं सेवाभाव के लिए प्रतिष्ठत यू–थांट शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिसम्बर, 2012 में फर्स्ट वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑफ स्पिरट्यूल्टी (प्रथम विश्व आध्यात्मिकता संसद) ने उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया।

दादा वासवानी का मानवतावादी स्वभाव, जाति, रंग और धर्म के भेदभाव से परे था। उनके जीवन में गीता के सार के साथ–साथ 'सरमन ऑन द माउंट' का प्रभाव प्रतिबिंबित होता था। उन्होंने करोड़ों लोगों को समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना सिखाया और हमें युद्ध से मुक्त शांत विश्व का दृष्टिदर्शन प्रदान किया।

दादा वासवानी असाधारण साहित्यिक प्रतिभा के धनी थे। अद्भुत नैसर्गिक काव्य प्रतिभा होने के साथ–साथ उनकी गद्य शैली भी धाराप्रवाह एवं रोचक थी। दादा वासवानी ने गहन दर्शनशास्त्र से लेकर दैनिक जीवन के लिए व्यावहारिक सुझावों पर अंग्रेजी और सिंधी भाषा में 200 से अधिक पुस्तकें लिखी, जिनका 12 से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है। आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण उनके काव्यत्मक गीत एवं छंद को 'अंगली संग्रह' में संकलित किया गया है।

दादा जे पी वासवानी की जन्मतिथि अर्थात् 2 अगस्त को वैश्विक क्षमा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सभी महाद्वीपों में युवा एवं बुजुर्ग लोग उनके साथ अनुचित व्यवहार करने वाले सभी व्यक्तियों को क्षमादान देते हुए प्रेम के संदेश का संचार कर शांति का अनुभव करते हैं। दादा का कहना था कि क्षमा, शांति का मुख्य माध्यम है। यह एक ऐसा सेतु है जिस पर चल कर किसी भी मानव ह्रदय को जीता जा सकता है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शांत ह्रदय ही विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

दादा वासवानी का जीवन प्रेम और करूणा की प्रतिमूर्ति था। लोगों को आश्वस्त करती उनकी उपस्थिति गीता के इस सुखद उपदेश को आगे बढ़ाती है कि 'सब ठीक है, सब ठीक था और सब ठीक रहेगा, आज भी और 100 वर्ष बाद भी'।

दादा वासवानी का 100 वर्ष की आयु में 12 जुलाई, 2018 को पुणे में निधन हो गया, जहां उनकी याद में एक खूबसूरत मंदिर बनाया जा रहा है। मानवता एवं प्रेममय करूणा से ओतप्रोत उनकी ज्योति आज भी साधु वासवानी मिशन से जुड़े करोड़ों लोगों के घरों और दिलों में प्रज्जवलित है।

डाक विभाग, महान शिक्षाविद्, मानवतावादी तथा दार्शनिक दादा जे पी वासवानी पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता अनुभव करता है, जिन्होंने प्रेम एवं करूणाभाव से करोड़ों लोगों के जीवन को सुखद बनाया।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : सुश्री गुलिस्तां

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक टिकटें	: 377100 प्रत्येक
Stamps Printed	: 377100 each
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00